

जिल्हा परिषदा व पंचायत समित्यांमधील बांधकामे/ विकास योजना यांच्याशी संबंधित प्रशासकीय व तांत्रिक मान्यता आणि निविदा/कंत्राट स्विकारण्याच्या अधिकारात वाढ करण्याबाबत.

## महाराष्ट्र शासन

### ग्राम विकास विभाग

शासन निर्णय क्रमांकः-झेडपीए-२०१६/प्र.क्र.५६/वित्त-९

बांधकाम भवन, फोर्ट, मंत्रालय,

मुंबई- ४०० ००९

तारीख: ०७ ऑक्टोबर, २०१७.

#### वाचा :-

- १) ग्रामविकास व जलसंधारण विभाग शासन निर्णय क्रमांकः-झेडपीए-२०१२/प्र.क्र. ६८०/वित्त-९, दि. ३१ जानेवारी, २०१३
- २) सार्वजनिक बांधकाम विभाग शासन निर्णय क्रमांकः :-विअसु-२०१५/प्र.क्र.२१८/इमारती-२, दि. १६ डिसेंबर, २०१५.
- ३) ग्रामविकास व जलसंधारण विभाग, शासन निर्णय क्रमांकः : झेडपीए-२०१६/प्र.क्र.२/वित्त-९, दि. २४ फेब्रुवारी, २०१६.

#### प्रस्तावना :-

शासन निर्णय क्रमांकः झेडपीए- २०१२/प्र.क्र ६८०/वित्त-९, दिनांक. ३१ जानेवारी, २०१३ अन्वये जिल्हा परिषदांमधील बांधकामे व विकास योजना राबविण्यासाठी प्रशासकीय व तांत्रिक मंजूरी देण्याबाबत जिल्हा परिषदा व पंचायत समित्यांना अधिकार प्रदान करण्यात आले आहेत. तथापि, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, शासन निर्णय दि. १६ डिसेंबर, २०१५ नुसार कार्यकारी अभियंता व कार्यकारी अभियंता (विद्युत कामे) यांच्या तांत्रिक मान्यतेच्या अधिकारात वाढ करण्यात आली होती त्यास अनुसरुन ग्रामविकास विभाग. दि. २४.२.२०१६ च्या शासन निर्णयान्वये संदर्भाधीन क्र.-१ च्या शासन निर्णयातील भाग-३ मध्ये त्यानुसार सुधारणा करण्यात आली आहे.

तथापि, सद्यस्थितीत दि. ३१.१.२०१३ च्या शासन निर्णयान्वये प्रदान केलेल्या अधिकारांची अंमलबजावणी करताना जिल्हा परिषदांना अडचणी येत असून सदर अडचणीचे निराकरण करण्यासाठी मार्गदर्शन होणेबाबत जिल्हा परिषदांकडून या विभागाकडे सतत विचारणा होत आहे. यासंदर्भात सखोल विचार करून जिल्हा पारिषदेतील विकास योजनांच्या बाबतीत प्रशासकीय मान्यतेचे अधिकार प्रदान करणे तसेच रु.५० लाखाचे वरील कामे किंवा विकास योजना राबविण्यासाठी येणाऱ्या खर्चाला द्यावयाच्या "तांत्रिक मान्यता" देण्याचे अधिकार जिल्हा परिषदेला प्रदान करण्याबाबतची बाब शासनाच्या विचाराधीन होती.

उपरोक्त बाबींचा विचार करता जिल्हा परिषदांमधील बांधकामे किंवा विकास योजना राबविण्यासाठी प्रशासकीय व तांत्रिक मंजूरी देण्याबाबत जिल्हा परिषदांना प्रदान करण्यात आलेल्या अधिकारांमध्ये अधिक सुस्पष्टता येण्यासाठी महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समिती लेखा संहिता, १९६८ मधील नियम-४ खालील परिशिष्ट-दोन मध्ये दुरुस्त्या करण्याबाबत शासनाने पुनर्विचार करून खालीलप्रमाणे निर्णय घेतला आहे.

### शासन निर्णय:-

वरील संदर्भ क्र. १ व ३ येथील शासन निर्णय अधिक्रमित करण्यात येत आहे. आता महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समिती लेखा संहिता, १९६८ मधील नियम-४ खालील परिशिष्ट-दोन अन्वये जिल्हा परिषदांमधील विविध योजना राबविण्यासाठी प्रशासकीय व तांत्रिक मंजूरी देण्याबाबतचा आणि कंत्राटे स्विकारण्याच्या अनावर्ती खर्चाच्या अधिकारासंदर्भात प्रस्तुतचा शासन निर्णय निर्गमित करण्यात येत आहे.

### महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समिती लेखा संहिता, १९६८ मधील नियम-४ खालील परिशिष्ट-दोन मधील जिल्हा परिषदा व पंचायत समितींच्या शक्तींची प्रक्रांती

(Devolution of Powers)

| अ.क्र | अधिकाराचे स्वरूप  | अधिकार प्रदान करण्यात आलेले प्राधिकारी / प्राधिकरण (Authority) | अंदाजित अनावर्ती खर्च (रुपयात) |                    |
|-------|---|--|--------------------------------|--------------------|
|       |   |  | न्यूनतम मर्यादा                | अधिकतम मर्यादा     |
| १     | २   | ३  | ४                              | ५                  |
| भाग-१ | मूळ बांधकामे व दुरुस्ती यांच्या संबंधातील प्रशासकीय मान्यता देण्याचा अधिकार |  |                                |                    |
|       |   | जिल्हा परिषद   |                                |                    |
|       |   | १.उप अभियंता   | ०                              | १,००,००० * पर्यंत  |
|       |   | २.जिल्हा परिषदेचे खातेप्रमुख                                   | १,००,००९                       | १०,००,००० * पर्यंत |
|       |   | ३.मुख्य कार्यकारी अधिकारी /अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी    | १०,००,००९                      | २५,००,००० *        |

|       |   |   |                                       |                       |
|-------|---|---|---------------------------------------|-----------------------|
|       |   | ४.अध्यक्ष, स्थायी समिती                                       | २५, ००, ००९                           | ३०,००,०००*            |
|       |   | ५.सभापती, विषय समिती  | २५, ००, ००९                           | २८,००,०००*            |
|       |   | ६.विषय समिती  | २८,००,००९                             | ३०,००,०००             |
|       |   | ७.स्थायी समिती  | ३०, ००, ००९                           | ५०, ००, ०००           |
|       |   | ८.जिल्हा परिषद  | ५०,००,००९                             | संपूर्ण अधिकार        |
|       |   | <b>पंचायत समिती</b>   |                                       |                       |
|       |   | १.गट विकास अधिकारी  | ०                                     | ५, ००, ०००*           |
|       |   | २.सभापती, पंचायत समिती  | ५, ००, ००९                            | १०,००,०००*            |
|       |   | ३.पंचायत समिती  | १०,००,००९                             | संपूर्ण अधिकार        |
|       |   |   |                                       |                       |
| अ.क्र | अधिकाराचे स्वरूप  | अधिकार प्रदान करण्यात आलेले प्राधिकारी /प्राधिकरण (Authority) | <b>अंदाजित अनावर्ती खर्च (रुपयात)</b> |                       |
|       |   |   | <b>न्यूनतम मर्यादा</b>                | <b>अधिकतम मर्यादा</b> |
| १     | २   | ३   | ४                                     | ५                     |
| भाग-२ | विकास योजना यांच्या संबंधातील प्रशासकीय मान्यता देण्याचा अधिकार |   |                                       |                       |
|       |   | <b>जिल्हा परिषद</b>   |                                       |                       |
|       |   | १.जिल्हा परिषदेचे खातेप्रमुख                                  | ०                                     | १०,००,०००* पर्यंत     |
|       |   | २.मुख्य कार्यकारी अधिकारी /अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी   | १०, ००, ००९                           | २५,००,००० *           |
|       |   | ३.अध्यक्ष, स्थायी समिती                                       | २५, ००, ००९                           | ३०,००,००० *           |
|       |   | ४.सभापती, विषय समिती  | २५, ००, ००९                           | २८,००,००० *           |
|       |   | ५.विषय समिती  | २८, ००, ००९                           | ३०, ००, ०००           |
|       |   | ६.स्थायी समिती  | ३०, ००, ००९                           | ५०, ००, ०००           |
|       |   | ७.जिल्हा परिषद  | ५०, ००, ००९                           | संपूर्ण अधिकार        |
|       |   | <b>पंचायत समिती</b>   |                                       |                       |
|       |   | १.गट विकास अधिकारी  | ०                                     | ५,००,००० *            |

|       |  |   |                                |  |  |
|-------|--|---|--------------------------------|--|--|
|       |  | २. सभापती, पंचायतसमिती  | ५, ००, ००९                     | १०,००,००० *  |  |
|       |  | ३. पंचायत समिती   | १०, ००, ००९                    | संपूर्ण अधिकार   |  |
|       |  | *टिप १  |                                |  |  |
| अ.क्र | अधिकाराचे स्वरूप   | अधिकार प्रदान करण्यात आलेले प्राधिकारी /प्राधिकरण (Authority) | अंदाजित अनावर्ती खर्च (रुपयात) |  |  |
| १     | २  | ३   | ४                              | ५  |  |
| भाग-३ | मूळ बांधकामे व दुरुस्ती यांच्या संबंधातील तांत्रिक मान्यता देण्याचा अधिकार |   |                                |  |  |
|       |  | १. उप अभियंता   | ०                              | ५,००,००० * पर्यंत  |  |
|       |  | २. कार्यकारी अभियंता  | ५,००,००९                       | १,००,००,०००/-* पर्यंत (रुपये एक कोटीपर्यंत) अट- १ : पुलांच्या बाबतीत, अधिक्षक अभियंता, कार्यकारी अभियंता यांनी तांत्रिक मंजूरी देण्यापूर्वी अधिक्षक अभियंता (संकल्प चित्र मंडळ) यांची मान्यता मिळविली पाहिजे. अट- २ : स्तंभ (५) मध्ये निर्दिष्ट केलेल्या अभियांत्रिकी कामामध्ये पाण्याच्या टाक्या, लांबीचे नळमार्ग, लहान उपरी टाक्या, नक्षीदार |  |

|  |                                    |  |  |
|--|------------------------------------|--|--|
|  |                                    |  | पिल्स्टर्न, तारांचे कुंपन, आहारगृह इ. सारख्या मान्यटाईपच्या व अभिकल्पना स्थापत्य-विषयक कामांचा समावेश होतो. इतर कामांच्या बाबीत संबंधीत काम ज्यांच्या अधिकारीतेत असेल असा विभागाचा कार्यकारी अभियंता, हा त्या संबंधीचा व्यवहार करण्यास आणि सार्वजनिक बांधकाम विभागाच्या सक्षम अधिकाऱ्यांची मंजूरी मिळविण्यास समूचित प्राधिकारी असेल. |
|  | ३. अधिक्षक अभियंता<br>(राज्य शासन) |  | मूळ कामे व दुरुस्त्या या संदर्भात सार्वजनिक बांधकाम विभागाच्या अद्यावत शासन निर्णया प्रमाणे तांत्रिक मान्यतेचे अधिकार राहील.   |
|  | ४. मुख्य अभियंता<br>(राज्य शासन)   |  | मूळ कामे व दुरुस्त्या या संदर्भात सार्वजनिक बांधकाम विभागाच्या अद्यावत शासन निर्णयाप्रमाणे तांत्रिक मान्यतेचे अधिकार राहील.  |

|        |   |  |                                   |  |  |
|--------|---|--|-----------------------------------|--|--|
|        |   | ५. कार्यकारी अभियंता<br>(विद्युत कामे)                             | ०                                 | रु.७,५०,०००/-* पर्यंत<br>त्यावरील विद्युत<br>कामाच्या रकमेस<br>सार्वजनिक बांधकाम<br>विभागाच्या अद्यावत<br>शासन निर्णयानुसार<br>सक्षम अधिकाऱ्यांची<br>तांत्रिक मंजुरी घ्यावी. |  |
|        |   | *टिप १   |                                   |  |  |
| अ.क्र. | अधिकाराचे स्वरूप  | अधिकार प्रदान करण्यात आलेले प्राधिकारी<br>/प्राधिकरण (Authority)   | अंदाजित अनावर्ती खर्च<br>(रुपयात) |  |  |
| १      | २   | ३  | ४                                 | ५  |  |
| भाग-४  | जि.प. च्या<br>स्वउत्तपन्नातून<br>राबविण्यात येणाऱ्या<br>विकास योजना यांच्या<br>संबंधातील तांत्रिक<br>मान्यता देण्याचे<br>अधिकार |  |                                   |  |  |
|        |   | १. गटविकास अधिकारी   | ०                                 | #५,००,००० * पर्यंत   |  |
|        |   | २. जिल्हापरिषदेचे<br>खातेप्रमुख                                    | ५,००,००९                          | #१०,००,००० *<br>पर्यंत   |  |
|        |   | ३. मुख्य कार्यकारी<br>अधिकारी/ अतिरिक्त मुख्य<br>कार्यकारी अधिकारी | ९०,००,००९                         | #५०,००,०००* पर्यंत   |  |
|        |   | ४. जिल्हा परिषद  | ५०,००,००९                         | संपूर्ण अधिकार<br>अट-क्र. १,२ व ३<br>नुसार कार्यवाही<br>करण्यात यावी.  |  |
|        |   |  | *टिप १, २ व \$ ३                  |  |  |

| अ.क्र | अधिकाराचे स्वरूप  | अधिकार प्रदान करण्यात आलेले प्राधिकारी /प्राधिकरण (Authority) | अंदाजित अनावर्ती खर्च (रुपयात) |                    |
|-------|---|---|--------------------------------|--------------------|
|       |   |   | न्यूनतम मर्यादा                | अधिकतम मर्यादा     |
| १     | २   | ३   | ४                              | ५                  |
| भाग-५ | बांधकामे/विकास योजनांच्या निविदा किंवा कंत्राट स्विकारण्याचा अधिकार |   |                                |                    |
|       |   | १.उप अभियंता  | ०                              | १,००,००० * पर्यंत  |
|       |   | २.कार्यकारी अभियंता / खातेप्रमुख                              | १,००,००९                       | १०,००,००० * पर्यंत |
|       |   | ३.मुख्य कार्यकारी अधिकारी /अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी   | १०,००,००९                      | २५,००,००० *        |
|       |   | ४.अध्यक्ष, स्थायी समिती                                       | २५,००,००९                      | ३०,००,०००*         |
|       |   | ५.सभापती, विषय समिती  | २५,००,००९                      | २८,००,०००*         |
|       |   | ६.विषय समिती  | २८,००,००९                      | ३०,००,०००          |
|       |   | ७.स्थायी समिती  | ३०,००,००९                      | ५०,००,०००          |
|       |   | ८.जिल्हा परिषद  | ५०,००,००९                      | संपूर्ण अधिकार     |
|       |   | पंचायत समिती  |                                |                    |
|       |   | १.गट विकास अधिकारी  | ०                              | ५,००,०००*          |
|       |   | २.सभापती,पंचायत समिती   | ५,००,००९                       | १०,००,००० *        |
|       |   | ३.पंचायत समिती  | १०,००,००९                      | संपूर्ण अधिकार     |
|       |   |   |                                | *टिप १             |

टिप:-

१) (\*) संबंधित स्तरावर दिलेल्या मान्यतेची माहिती विषय समितीस/स्थायी समितीस/ पंचायत समितीच्या पुढील बैठकीत अवलोकनार्थ सादर करण्यात यावी. तसेच जिल्हा परिषदेतील प्रत्येक विभागांनी यासंदर्भात केलेल्या कार्यवाहीचा अहवाल जिल्हा परिषदेच्या आगामी सर्वसाधारण सभेत सादर करण्यात यावा.

२)(#) भाग-४ मधील विकास योजनेसंदर्भात ज्या विभागाची योजना असेल त्या विभागाच्या जिल्हा परिषद/ पंचायत समिती स्तरावरील अधिकाऱ्यांचा तांत्रिक सल्ला घेऊनच संबंधित अधिकाऱ्यांनी त्या योजनेस तांत्रिक मान्यता द्यावी.

३)(\$) उपरोक्त टिप क्र. १ व २ च्या अधिन राहून जिल्हा परिषद स्तरावरील योजनेस जिल्हा परिषदेकडून मंजूरी देण्याबाबत कार्यवाही पूर्ण न झाल्यासच प्रस्तावीत योजनेच्या तांत्रिक मान्यतेसंदर्भातील प्रस्ताव शासनाकडे सादर करावा.

अटी:-

१) विकास योजनेला तांत्रिक मान्यता देण्यासाठी जि.प. सभेला शिफारस करण्याकरिता जिल्हा परिषदेच्या मुख्य कार्यकारी अधिकारी यांच्या अध्यक्षतेखाली तांत्रिक समिती गठीत करण्यात यावी. सदर समितीमध्ये अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मुख्य लेखा व वित्त अधिकारी, योजना राबविणाऱ्या विभागाचे खाते प्रमुख व आवश्यकतेनुसार संबंधित विषयाच्या तज्ज्ञ व्यक्तिस निमंत्रित करावे.

२) महाराष्ट्र जिल्हा परिषदां व पंचायत समित्या अधिनियम, १९६१ मधील जिल्हा परिषदेचे प्रशासकीय अधिकार व कर्तव्य ( कलम १०० ) अन्वये पहिल्या अनुसूचीतील कामांचे विषय (विकास विषयक कार्यासह) घेण्यात यावेत.

३) असे करताना प्रचलित शासन निर्णयाचे पालन व्हावे.

या अनुषंगाने महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समिती लेखा सहिता, १९६८ मधील नियम ४ खालील परिशिष्ट दोन मध्ये आवश्यक ते बदल करण्यात येतील.

सदर शासन निर्णय महाराष्ट्र शासनाच्या [www.maharashtra.gov.in](http://www.maharashtra.gov.in) या संकेतस्थळावर उपलब्ध करण्यात आला असून त्याचा संकेताक २०१७१००७१२११३३६२० असा आहे. हा आदेश डिजीटल स्वाक्षरीने साक्षांकित करून काढण्यात येत आहे.

महाराष्ट्राचे राज्यपाल यांच्या आदेशानुसार व नावाने.

( ना.भा. रिंगणे )  
शासनाचे उप सचिव

प्रत,

१. मा.मुख्यमंत्री यांचे प्रधान सचिव,
२. मा.उपमुख्यमंत्री यांचे सचिव,
३. मा.मंत्री (ग्रा.वि.) यांचे खाजगी सचिव
४. मा.राज्यमंत्री (ग्रा.वि.) यांचे खाजगी सचिव

५. सर्व जिल्हा परिषदांचे अध्यक्ष
६. मा.मुख्य सचिव यांचे स्वीय सहाय्यक
७. मा.विधान सभा / विधान परिषद सदस्य
८. महालेखाकार ( स्थानिक संस्था ) महाराष्ट्र-१, मुंबई (पाच जादा प्रतीसह)
९. महालेखाकार ( स्थानिक संस्था ) महाराष्ट्र-२, नागपूर (पाच जादा प्रतीसह)
१०. सर्व विभागीय आयुक्त ( महसूल )
११. संचालक तथा मुख्य लेखा परिक्षक, स्थानिक निधी लेखा, म.रा. कोकण भवन, नवी मुंबई
१२. सर्व सहसचिव / उपसचिव, ग्राम विकास व जलसंधारण विभाग, मंत्रालय, मुंबई-३२
१३. सर्व सहमुख्य लेखा परिक्षक, स्थानिक निधी लेखा (कोकण/रत्नागिरी/पुणे/ नागपूर/ औरंगाबाद/अमरावती)
१४. सर्व जिल्हा परिषदाचे मुख्य कार्यकारी अधिकारी
१५. सर्व जिल्हा परिषदाचे अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी
१६. सर्व जिल्हा परिषदाचे मुख्य लेखा व वित्त अधिकारी
१७. सर्व जिल्हा कोषागार अधिकारी
१८. वित्त विभाग ( व्यय-१५/अर्थ-१७/वित्त आयोग कक्ष )
१९. ग्राम विकास व जलसंधारण विभाग ( सर्व कार्यासने )
२०. मा.सचिव (ग्रा.वि.व पं.रा.) यांचे स्वीय सहाय्यक